विकास पेपर बैक्स
मेन रोड, गांधी नगर, दिल्ली-110031

प्रतिहिंसा तथा अन्य कहानियाँ

मुद्राराक्षस

© लेखक

प्रकाशक
विकास पेपरबैक्स
IX/221, मेन रोड, गांधीनगर
दिल्ली-110031

प्रथम संस्करण
1992

मूल्य
पचास रुपये

मुद्रक
अजय प्रिंटर्स
शाहदरा, दिल्ली-110032

PRATIHINSA TATHA ANYA KAHANIYAN (Hindi)
by Mudrarakshas
Price : Rs. 50.00

अपने प्रिय साथी
विलायत जाफ़री को

चिरकुट

पुरानी मोटर में उसके दरवाजे कुछ ज्यादा ही परेशानी पैदा करते हैं। यह मोटर, जिसे मैं बहुत शान से 'कार' कहता था, एक तो पहले से ही पुरानी थी, ऊपर से कई बरस मेरे पास रहकर और ज्यादा पुरानी हो गई थी। लिहाजा यह सहज था कि उसके दरवाजे भी परेशानी पैदा करते। एक बार उसका दाहिना दरवाजा बन्द हुआ, तो फिर खुला ही नहीं। बड़ी मुश्किल से बायाँ दरवाजा खुला और दो दिन तक सवारी के लिए मोटर में मुझे बाएँ दरवाजे से घुसना पड़ा था। कभी उसके शीशे चढ़ जाते, तो उतरने का नाम नहीं लेते थे। एक बार एक दरवाजा बहुत दिन तक जोर से बन्द करने के बावजूद गाड़ी चलने पर लय-ताल के साथ बजना शुरू कर देता था और हमें ऐसा लगता था, जैसे उस तरफ किसी पाजी लड़के ने कोई डिब्बा लटका दिया हो।

एक बार तो हद ही हो गई। बाईं तरफ मेरी बीवी बैठी थी। मोटर दाहिने घुमाने पर दरवाजा बड़े मजे में झूलकर खुला और बीवी लुढ़क गई। पता नहीं, आप जानते हैं या नहीं, बीवी खुद गिरे, तो भी वह आप पर ही नाराज होती है और आप गिरा दें, तो भी। अगर कोई दूसरा गिरा दे, तब भी वह आप पर ही नाराज होगी। पता नहीं, बीवियों को कैसे यह शंका बनी रहती है कि उनके साथ होनेवाले इस तरह के हादसे के पीछे आपका ही हाथ है। और कुछ नहीं, तो बीवी को यह विश्वास तो हो ही जाता है कि आप उसके गिरने का मजा ले रहे हैं, भले ही आप कितने ही गम्भीर क्यों न बने रहें। अगर उस वक्त आप उससे सहानुभूति दिखाते हुए उसे उठाने की कोशिश करें, तो वह इस तरह झिड़केगी, गोया आप उसे दोबारा धकेलने जा रहे हों। अगर इस झिड़की को आप याद रखें और उसके

दोबारा गिरने पर आप उसे उठाने के बजाय दूर खड़े रहें, तो भी आप झिड़की खाएँगे, क्योंकि बीवी आपको भावनाशून्य मानकर और ज्यादा नाराज होगी। बहुत-से लोग आपको ऐसी स्थितियों का सफलतापूर्वक सामना करने की बहुत-सी तरकीबें बताएँगे। पर मैं दावे से कह सकता हूँ कि मुसीबत के वक्त इनमें से कोई काम नहीं आएगी।

खैर, इस हादसे के बाद मैंने फैसला किया कि दरवाजा जल्दी ठीक करा लूँगा।

यहाँ यह भी बता दूँ कि आप मोटर का दरवाजा ठीक करा लेने से न तो बीवी को गिरने से शर्तिया तौर पर बचा सकते हैं, न अपने-आपको इस घटना से जुड़ी झिड़कियों से, क्योंकि बीवी ने अकसर मोटर के दरवाजे के अलावा भी गिरने के साधन खोज रखे होते हैं। वह बाथरूम में फिसलकर गिर सकती है और बाथरूम गीला करने का दोष आप पर डाल सकती है। रसोई में अलमारी के ऊपर रखी चीज उतारने की कोशिश में स्टूल से गिर सकती है और आपको यह याद दिलाया जा सकता है कि अलमारी के ऊपर रखी चीज आपने ज्यादा पीछे खिसका दी थी। वह अपनी ही सैंडिल से उलझकर गिर सकती है और जुर्म आप पर आयद हो सकता है। एक बार मेरे एक कवि मित्र की बीवी तो एक फुटपाथ से ही गिर पड़ी और उसका पैर टूट गया। कवि मित्र से बाकी बात मैंने पूछी नहीं।

तो हमने फैसला किया कि मोटर का दरवाजा ठीक करा लिया जाएगा।

यह इतना आसान काम नहीं था। अगर मोटर किसी ट्रक से लड़ गई होती या उसकी धुरी टूटकर पहिया दूर जा गिरा होता, तो मिस्तरी ज्यादा तत्परता से मोटर ठीक करता। दरवाजा ठीक करने में उसे मेहनताना बहुत थोड़ा मिलना था, इसलिए एक-दो हथौड़े मारकर उसने फुरसत के वक्त लाने को कहा।

इस फुरसत का इन्तजार मैंने कई दिन किया। इस बीच एक दिन वह अजीब-सा आदमी आया, जिसका बयान मैं करनेवाला हूँ—

उसने एक घिसी हुई और जगह-जगह से फटी पतलून के ऊपर उससे भी ज्यादा फटी कमीज और तेल से चीकट हुई वास्कट पहन रखी थी।

उसके जूते बहुत मोटे और वजनी थे, क्योंकि उनकी बहुत बार मरम्मत हो चुकी थी और मैल की परत ने उन्हें एक बिल्कुल अजूबा बना दिया था। उसके पैर जूते में इस तरह घुसे हुए थे, जैसे छोटे सूराखों में सूअर के बच्चे दुबक गए हों। उसकी बहुत घनी भौंहों के नीचे आँखें बहुत छोटी, लेकिन चमकीली थीं और नाक किसी आधी खुली छतरी की तरह चमड़े के थैले जैसे मुँह को ढके हुए थी। उसके सिर पर लम्बे बाल थे, अगर उन्हें बाल कहा जा सके, क्योंकि बाल से ज्यादा वे मैली रस्सियों के गुच्छे लगते थे। शायद जन्म के बाद उस आदमी ने मृत्यु से पहले कभी न नहाने का फैसला किया हुआ था।

उसकी साइकिल भी बिल्कुल उसी की जैसी अजूबा थी। उसके पिछले पहिये की बगल में वह डिब्बा लगा हुआ था, जिसे मोटरसाइकिलों में कुछ जरूरी सामान रखने के लिए अलग से लगवा लिया जाता है। आगे के हैंडल के साथ एक ढक्कनदार टोकरी थी। साइकिल का फ्रेम बहुत बार बहुत जगह से टूटा होगा, क्योंकि वह जगह-जगह पर जोड़ा गया था और जोड़ के निशान उसके दाँतों की तरह चमक रहे थे। टायर में हर तरफ थेगलियाँ थीं। फ्रेम के बीचोबीच दोनों पैरों के दरम्यान लकड़ी की एक चपटी पेटी टँगी हुई थी। साइकिल पर हर तरफ फटे थैले लटके थे। इस अजीब-से आदमी को एक नजर में देखकर लगता था, वह आदमी से ज्यादा कबाड़ का एक ढेर है। उसने अपनी मुस्कराहट को भरसक और ज्यादा चौड़ी करते हुए मुझे अभिवादन किया और पूछा, "ये कार आपकी ही है?"

"हाँ, क्यों?" जाने क्यों उसके सवाल से मैं थोड़ा चिढ़ गया।

"बहुत अच्छी गाड़ी होती है साहब।" वह अपनी साइकिल की गद्दी पर कुहनी टेककर बोला, "इसका इंजन तो लाजवाब होता है।"

इस तारीफ से थोड़ा नरम होने के बावजूद मैं समझ नहीं पा रहा था कि उसकी नीयत क्या है, इसलिए मैं चुप रहा।

अब उसने अपनी साइकिल स्टैंड पर खड़ी कर दी और फाटक पर आ गया। मोटर को गौर से देखते हुए बोला, "इसकी बाईं तरफ की ब्रीडिंग उखड़ रही है साहब। और उखड़ी तो कहीं रास्ते में गिर जाएगी।"

"हूँ।" मैं अब भी उसे उसी सन्देह से देखे जा रहा था।

इन निगाहों का उस पर कोई असर नहीं हुआ। आसमान की तरफ आँखें मिचमिचाते हुए बोला, "बड़ी गरमी है साहब। ठंडा पानी पिलाइए साहब, फ्रिज का पानी पीकर तबीयत खुश हो जाती है।"

उसकी इस बात पर मुझे और गुस्सा आया। जिस ढंग से उसने पानी की फरमाइश की थी, उससे लग रहा था, पानी सामने आने पर वह कहेगा, साहब, कुछ पुलाव मिल जाएगा? मेज पर बैठकर पुलाव खाने में बहुत मजा आता है।

गुस्से के बावजूद उसकी पानी की माँग न मानना ठीक नहीं लगा। जब तक उसके लिए पानी आया, उसने मजबूत तार से बने दो छोटे-छोटे पुरजे अपने थैले से निकाल लिए। उन्हें दिखाता हुआ बोला, "ये देखिए, दो ही थे और आपकी ब्रीडिंग के भी दो ही लॉक खराब हुए हैं। ये मत सोचिएगा साहब कि मैं इनके पैसे ले लूँगा। भगवान् ने चाहा, तो आप ही मुझे किसी बड़े काम के लिए पैसे देंगे।"

अब वह फाटक के अन्दर भी आ गया। लॉक लगाने से पहले उसने दोनों तरफ से मोटर का कुछ ऐसे मुआयना किया, जैसे उसमें निकलनेवाले मांस का अन्दाज लगा रहा हो।

पानी आ गया, मगर उसने गिलास की तरफ अपनी काली हथेली दिखाकर कहा, "जरा ठहरो!"

इसके बाद बिना ब्रीडिंग उखाड़े उसने उसमें दोनों लॉक लगा दिए। साँप के फन की तरह उभर आई वह रूपहली पत्ती बड़े सलीके से चिपककर बैठ गई।

"पानी दो।" उसने बच्ची के हाथ से गिलास ले लिया। थोड़ा-सा पानी पीने के बाद उसने कहा, "साहब, पानी को खाना चाहिए। धीरे-धीरे एक-एक घूँट करके।"

उसने मेरी खीज बढ़ाते हुए सचमुच इसी तरह पानी पिया। खीज उतारने का चूँकि और कोई तरीका नहीं था, इसलिए मैंने पूछा, "कितने पैसे हुए?"

उसने बहुत नाटकीय अप्रसन्नता दिखाई। बोला, "देखिए साहब, अब ऐसे मेरी बेइज्जती न कीजिए। आप क्या सोचते हैं, मैं इस जरा-सी खिदमत

के लिए आपसे पैसे ले लूँगा !"

वह आदमी गन्दगी का एक अजीब मसखरा पुतला लग रहा था, लेकिन उसके आत्मविश्वास को देखकर उसे खारिज करना जरा मुश्किल काम था। मेरी खीज ज्यादा देर बनी नहीं रह पाई, क्योंकि मुझे याद आया कि खराब तालेवाले दरवाजे के रूप में मेरी मोटर में बीवी को गिरानेवाली एक सम्भावना कई रोज से बनी हुई है। मेरे मैकेनिक के पास अभी फुरसत नहीं है। इस बीच बीवी को मोटर में बैठने की जरूरत कभी भी पड़ सकती है।

वह आदमी जरूर मनोविज्ञान का अच्छा ज्ञाता रहा होगा, क्योंकि मुझे घूरता हुआ बोला, "मेरी शक्ल पर मत जाइए जनाब, मैंने किसी जमाने में अंग्रेजों की मोटरें ठीक की थीं।"

"इसके दरवाजे का ताला ठीक नहीं है। ठीक कर सकते हो?" मैंने पूछा।

"अब साहब, इम्तहान तो लीजिए नहीं। पहले मुझे काम करने दीजिए। अगर मेरा काम दूसरों से इक्कीस न निकले, तो जो जुरमाना लगाएँ, दूँगा।" वह मोटर की तरफ बढ़ता हुआ बोला, "किधर का लॉक खराब है?"

"बाईं तरफ का।"

"हूँ।" उसने दरवाजा खींचा। वह खुल गया। ताला देखने के लिए उसने दरवाजे को कई बार बन्द किया और खोला। इसके बाद शीशा नीचे किया। पूरी तरह नीचे कर देने के बाद शीशा फिर चढ़ाया। इसके बाद दरवाजे को किसी अनुभवी डॉक्टर की तरह घूरता हुआ बोला, "शीशा चढ़ानेवाली मशीन के दाँते भी घिस गए हैं।"

"अरे वो छोड़ो।" मैंने कहा, "वैसे तो बहुत कुछ घिस गया है। तुम ताला ठीक कर दो, बस।"

"आप हुक्म तो करिए साहब, ये ताला क्या चीज है···" कहते हुए उसने अपनी साइकिल पर बँधे औजारों के थैले उतारना शुरू कर दिए।

कैनवस के बने ये तीन थैले ज्यादातर मोटरों के पुराने घिसे-टूटे पुरजों से भरे हुए थे। इन्हीं पुरजों में से कई को वह औजारों की तरह भी इस्तेमाल

में लाता था। अपने औजारों और पुरजों की दुनिया उसने इस तरह फैला ली, जैसे भारी-भरकम चीर-फाड़ से पहले कोई सर्जन करता है। उसके औजारों को देखकर कोई भी कह सकता था कि बावजूद इसके कि वह एक निहायत आधुनिक मशीन सुधारता था, पर औजारों की नजर से काफी हद तक प्रस्तरयुगीन प्राणी ही था। उसके कुछ औजार तो निश्चय ही कुछ दिनों के बाद अजायबघरवालों के लिए दुर्लभ वस्तु हो जानेवाले थे। मसलन उसका हथौड़ा। टूटे हुए एक्सिल का कोई चार-पाँच इंच लम्बा टुकड़ा उसने एक क्रॉस की शक्ल में बाँस के टुकड़े को फाड़कर अटका लिया था। फटे बाँस के बीच अटके लोहे के इस टुकड़े को उसने तार, सुतली और डोरियों से खूब कसकर लपेट दिया था। मूठ चुभे नहीं, इसलिए उसने साइकिल की पुरानी ट्यूब का एक टुकड़ा उस पर चढ़ा दिया था। आदिम युग के आदमी और इस मिस्तरी के बीच रबर का यह टुकड़ा इतिहास के लम्बे फासले की गवाही दे रहा था।

उसके औजारों का अजायबघर देखकर मुझे खासा धक्का लगा, "तुम इन्हीं औजारों से काम करते हो?"

उसने औजार सजाना छोड़कर मेरी तरफ ऐसे अचम्भे से देखा, जैसे वह कोई बड़ा गवैया हो और मैंने उसके सुरताल पर सन्देह किया हो।

"देखिए साहब!" वह गम्भीर होकर बोला, "काम समझ-बूझ और कारीगरी से होता है, औजारों से नहीं।"

उसने यह बात शेख सादी की किताब से नहीं उद्धृत की थी, लेकिन उसकी विश्वसनीयता उतनी ही थी, जितनी गुलिस्तां या पंचतन्त्र के सुभाषित की हो सकती है।

उसने बात ठीक ही कही थी। मैं थोड़ा लज्जित हो आया। फिर अपने को सँभालते हुए मैंने कहा, "तुम्हारी बात सही है, लेकिन अच्छे औजार हों, तो काम में आसानी हो जाती है। और फिर हथौड़ा कोई ज्यादा महँगी चीज तो है नहीं।"

उसने औजार बनानेवाली एक बड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनी का नाम लिया, "मेरे पास सारे औजार उसी के थे। देसी औजारों से मैं काम नहीं करता। लेकिन आप नहीं जानते, यहाँ लोग बहुत चोर हैं। औजार चुरा

लेते हैं। हथौड़ा चुरा लिया, पेचकस चुरा लिया। मेरे पास बहुत उम्दा प्लास था, वो भी चुरा लिया हरामियों ने।"

"किसने चुरा लिया?"

"अरे आप नहीं जानते, ये मैकेनिक बड़े हरामी होते हैं। औजार तो देखते-देखते चुरा लेते हैं। इसीलिए अब मैं अच्छे औजार नहीं रखता।" उसने कहा और अन्तिम थैले से भी कुछ सामान निकालकर सजाने लगा।

शायद उसकी बातों से उकताकर या उसकी बातों से पैदा होती उलझन दबाने के लिए मैंने कहा, "अच्छा, तुम काम करो, मैं आता हूँ।"

"आप फिक्र न कीजिए साहब! इत्मीनान से अपना काम कीजिए।" उसने कहा।

अन्दर आने के बाद बहुत देर तक कुछ ठोंके-पीटे जाने की आवाजें मैं सुनता रहा। इसके बाद वे आवाजें बन्द हो गईं।

इस बीच मेरी बीवी को दूसरी चिन्ता होने लगी। उसका विश्वास था कि यह आदमी जरूर कोई घिसा हुआ चोर भी होगा। उसने बहुत विश्वास से कहा, "ये ठीक है कि वो मैकेनिक है, मगर किसी की नीयत का क्या भरोसा? स्टेपनी ही लेकर चल दे तो?"

उसने अपना एक पुराना अनुभव फिर सुना दिया। इसे वह पहले भी कई बार सुना चुकी थी। हर महीने वह मेरे अखबारों और खाली बोतलों के अलावा कुछ डिब्बे-डिब्बियाँ कबाड़ियों को बेचती थी। उसका विश्वास कि कबाड़ी तोल में गड़बड़ी करते हैं। इसलिए मोटर पर लोहामण्डी का चक्कर लगाकर उसने एक बढ़िया तराजू और बाँट खरीद लिए थे। इस तराजू से वह बहुत होशियारी के साथ एक-एक पन्ने की अदला-बदली करके अखबार पहले ही तोल लेती थी। इसके बाद बिना तोल बताए वह कबाड़ियों का इम्तहान लेती थी, "इसे तोलो। देखो कितना है!"

जाहिर है, रद्दीवाला तीस किलो रद्दी को पन्द्रह किलो बताता था। तब उसे डाँटा जाता था, "तुम लोग बहुत बेईमान होते हो। ये पन्द्रह किलो है?"

"तब कितनी है?"

"ये तीस किलो है। मैंने तोल रखी है।"

इस पर हारकर कबाड़ी कहता था, "अच्छा, अभी आता हूँ। थैला ले आऊँ।" इसके बाद वह लौटकर नहीं आता था। धीरे-धीरे ज्यादातर कबाड़ी यह जान गए थे कि इस घर में अखबार पहले ही तोल लिए जाते हैं। तब वे भाव ही कम बताने लगे। चार के बजाय वे लोग दो रुपये पर आ गए।

इस झिक-झिक का मैं बहुत पुराना गवाह था। झंझट कम करने की नजर से मैंने सुझाव दिया था कि कबाड़ी को अपना तराजू-बाँट दे दिया करो और उससे अपने सामने ही रद्दी तुलवा लो। इस पर वह नाराज हो गई थी, "आपको कुछ नहीं पता। ये लोग चोर होते हैं। तराजू-बाँट गायब कर देंगे।"

इसके बाद उसने अपनी माँ का एक किस्सा सुनाया। जाहिर है, उसकी माँ भी रद्दीवाले के साथ इसी तरह पेश आती होगी। किस्सा यूँ है कि एक बार उसकी माँ के घर पर उन्हीं की तराजू से रद्दी लेने के बाद रद्दीवाले ने कहा, "मेम साहब, मैं अपना सामान यहाँ रखे जा रहा हूँ। जरा तराजू दे दीजिए, पड़ोस की कोठी में रद्दी तोलकर अभी दे जाऊँगा।" तराजू और बाँट लेकर गया रद्दीवाला दोबारा कभी वापस नहीं लौटा। बहुत देर के बाद उसका थैला देखा गया, तो उसमें थोड़े से चिथड़े थे और एक जोड़ा फटे जूते। इस किस्से को मेरी बीवी मेरे तर्कों के विरुद्ध ब्रह्मास्त्र की तरह इस्तेमाल करती थी।

इस किस्से से आक्रान्त होकर मैंने बाहर की ठोंक-पीट सुनने की कोशिश की। वहाँ एकदम सन्नाटा था। सहसा मुझे भी आशंका हो गई। मैंने बाहर का परदा थोड़ा-सा हटाकर खिड़की से झाँका। वह आदमी फर्श पर बैठा किसी चीज को प्लास की मदद से मरोड़ने या सीधा करने में जुटा था।

बीवी की तमाम झिड़कियों के बावजूद बाहर बैठकर उस आदमी की निगरानी करना मुझे ठीक नहीं लगा। सच तो यह है कि इतनी देर में मानव-मनोविज्ञान में उस आदमी की पैठ का मैं इतना कायल हो गया था कि मुझे लग रहा था, अगर उसने मुझे आसपास मँडराते देखा, तो मेरी

नीयत का भेद खोल देगा।

मैं दोबारा परदा खींचकर खिड़की से हट गया। लेकिन और किसी काम में व्यस्त नहीं हो पाया। मैं, दरअसल, अब मानव-मनोविज्ञान के दो योद्धाओं के बीच धक्के खा रहा था। एक तरफ मेरी नितान्त अनुभवी बीवी और दूसरी तरफ घाघ किस्म का मोटर मैकेनिक। मैं अपनी बीवी को यह विश्वास दिलाने की कोशिश कर रहा था कि मैं मैकेनिक की निगरानी मुस्तैदी से कर रहा हूँ और मैकेनिक को आभास नहीं होने देना चाहता था कि मैं ऐसा कर रहा हूँ।

इस उधेड़बुन में थोड़ी देर के लिए मेरा ध्यान बाहर से हट गया। दोबारा मैकेनिक की याद आने पर मैंने फिर परदा हटाकर झाँका। वह नहीं था। उसके कुछ अजीब-से औजार वहाँ पड़े थे, पर वह नहीं था। मैंने मोटर की तरफ की खिड़की से भी झाँका, वह उधर भी नहीं दीखा। शायद वह मोटर के दूसरी तरफ लेटकर कुछ कर रहा हो, पर उसकी भी आहट नहीं मिली।

मैं संकोच छोड़कर बाहर निकल आया। वहाँ मैकेनिक नहीं था। उसकी साइकिल भी नहीं थी। कुछ टूटे-फूटे पुरजे और बेढंगे-से औजार जमीन पर बिखरे हुए थे। मोटर के दोनों दरवाजे खुले हुए थे और उनके हत्थे निकले हुए गद्दी पर रखे थे।

मैंने घबराहट में डिक्की खोली। उसमें स्टेपनी मौजूद थी, मगर जैक गायब था।

हो गया कबाड़ा! मैंने सोचा। नुकसान से ज्यादा मैं बीवी से डर गया। उसका खयाल था कि मैं पतियों में सबसे ज्यादा बेशऊर और बेढंगा पति था, जो इत्तफाक से उसके हिस्से आ गया था। अगर वह ध्यान न रखे, तो मैं घर को लुटवाने और खुद लुटने में बहुत आसानी से कामयाब हो जाऊँ। मैंने अनुमान लगाने की कोशिश की कि गायब जैक कितने का होगा। शायद सौ-डेढ़ सौ का, या दो-तीन सौ का। जैक मैंने कभी खरीदा ही नहीं था। वह मोटर के साथ ही मिला था।

ठीक इसी वक्त मुझे घबराहट में डालती हुई मेरी बीवी भी वहाँ पहुँच गई। किसी चोर को चोरी करते वक्त सीधे थानेदार द्वारा दबोचे जाने पर

जो अनुभव होता होगा, वही मुझे भी हुआ। मैंने डिक्की फौरन बन्द कर दी।

बीवी ने एक शातिर पुलिस अफसर की तरह सवाल किया, "मैकेनिक कहाँ है?"

"मैकेनिक! वो शायद रोटी खाने गया हो।"

"रोटी खाने! अभी आया, अभी भूख भी लग गई? बताकर क्यों नहीं गया?"

"हाँ, कहकर तो जाना चाहिए था।" मैंने उसका भरपूर, मगर खोखली आवाज में समर्थन किया।

"ये लोग तो खाना बाँधकर निकलते हैं। ये क्या किसी होटल में खाता है? साइकिल भी नहीं है।"

"हाँ, साइकिल भी नहीं है। साला औजार छोड़ गया है।" मैंने यह साबित करने की कोशिश की कि उसकी भी जमानत तो यहाँ है।

पर बीवी ने तीखेपन से मुझे घूरा, "औजार! ये औजार हैं? दो रुपये किलो का लोहा है। दस रुपये का भी नहीं होगा।" उसका रद्दीवाले कबाड़ियों से बहस करके अर्जित ज्ञान भी उसी की मदद में जा खड़ा हुआ। उसकी बात सही थी। उसने सहसा पूछा, "स्टेपनी है?"

"हाँ, वो तो देख ली है।"

मेरे चेहरे पर इस बीच जरूर कोई गड़बड़ी हो चुकी होगी, जो बड़ी बेशर्मी से चुगली कर रही थी। बीवी ने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया। लगभग छीनकर चाभी लेते हुए उसने डिक्की फिर खोल ली। स्टेपनी सही-सलामत थी, पर मुझे और ज्यादा घबराहट में डालते हुए उसने पूछा, "यहाँ जो मशीन रखी रहती थी, वह कहाँ है?"

अब मैं पूरी तरह चित हो चुका था। उसे जैक का नाम नहीं मालूम था, लेकिन उसके अधिकार में कहाँ क्या है, यह उसे बखूबी पता था।

"हाँ, बात तो सही है।" मैंने उस खाली जगह को इस तरह घूरा, जैसे पहली बार मुझे खयाल आया हो।

यह चालाकी भी काम नहीं आनी थी, बल्कि इससे मेरी दुर्दशा में वृद्धि का एक कारण और जुड़ गया। बीवी नाराजी से घूरती हुई बोली, "तुम

किसी चीज का कोई खयाल नहीं रखते हो। तुम्हें नुकसान की परवाह ही नहीं है।"

लापरवाही से इसी तरह के कुछ और फिकरे वह मेरे चेहरे पर पटकती हुई खुले दरवाजे की तरफ बढ़ गई। इस बात पर उसी ने ध्यान दिया कि बायें दरवाजे का शीशा चढ़ानेवाली मशीन भी गायब है। "और ये देखा है? तुम क्या देखोगे! इसमें यहाँ से सारे पुरजे गायब हैं।" उसने कहा।

मैं दरवाजे को भी झुककर उस चोर की तरह मासूमियत से घूरने लगा, जिसकी पिटाई और इकबालिया बयान के बाद पुलिस खुद उसी की खोदी सेंध दिखा रही हो।

"तुमने तो हद ही कर दी। अरे, वो कुछ भी घर से उठा ले जाता। वो, देखो गैराज के अन्दरवाला दरवाजा खुला पड़ा है। मजे से अन्दर घुसकर लॉकर पर हाथ साफ कर जाता। पर तुम्हें क्या, तुम तो तब भी इसी तरह खड़े हो जाते।"

"लेकिन यह तो सोचो, उस बदमाश ने जो चोरी की है, उसकी पुलिस रिपोर्ट भी क्या की जाये!"

"क्यों नहीं की जा सकती!" उसका तर्क था कि चोरी चाहे जितनी छोटी हो, चोरी ही होती है। चोर को सजा दिलवाना ज्यादा जरूरी होता है।

मैं बुरी तरह फँस चुका था। पकड़े जाने पर जैक चुराकर भागनेवाले मैकेनिक की भी इतनी दयनीय स्थिति नहीं हो सकती थी, जितनी मेरी थी।

"और ये सामान! ये किस काम का!" लगा, वह उन टूटे-फूटे पुरजों को उठाकर सड़क पर फेंक देगी। उसकी आवाज अब तक जरूर खासी ऊँची हो चुकी होगी, क्योंकि आस-पड़ोस के बरामदों में कुछ पड़ोसी जाहिरा तौर पर अपने को व्यस्त दिखाते हुए नजर आने लगे थे। विवाहित पड़ोसी बहुत दुष्ट चीज होते हैं और जो लोग यह नहीं जानते, उन्हें अपने को बहुत भाग्यवान नहीं मानना चाहिए। संस्कृत में मित्र की परिभाषा से विवाहित पड़ोसी बिल्कुल उलटे होते हैं। मित्र तो छुपाने योग्य बातों को छुपाता है और गुणों का प्रचार करता है, पर विवाहित पड़ोसी बहुत धूर्त होता है। वह

छुपाने योग्य बात को नमक-मिर्च लगाकर फैलाता है और आपके गुणों के बारे में एकदम मासूम बन जाता है।

मेरी बीवी की आवाज जल्दी ही अब कुछ और ऊँची होनेवाली थी और पड़ोसियों के कान पूरी क्षमता से काम करने को तैयार हो रहे थे कि तभी वह आदमी फाटक के पास बरामद हो गया, अपनी साइकिल और हमारी मोटर के जैक सहित।

साइकिल रखकर अन्दर घुसते हुए बोला, "बड़ी दूर जाना पड़ा। वेल्डिंगवाला बहुत बदमाश था। जरा से काम के पाँच रुपये माँगने लगा।" उसने दरवाजे की मशीन और जैक फर्श पर रख दिए। सामान रखकर सीधे खड़े होते-होते उसने भाँप लिया कि उसकी अनुपस्थिति में हमने क्या सोचा था। हँसता हुआ बोला, "सब मिस्तरी एक जैसे नहीं होते। मैं काम ईमानदारी से करता हूँ, औरों की तरह नहीं हूँ कि एक पेच लगाया, दूसरा हैंडल खोलकर बेच लिया।"

उसने यह बात इस तरह मेरी तरफ देखते हुए कही, जैसे उस पर इल्जाम मैं ही लगाता रहा था। मजे की बात यह है कि मैं उसे यह नहीं बता सकता था कि चोरी का शक मैंने नहीं, मेरी बीवी ने किया था। मैं शायद माफी ही माँगने लग जाता कि मेरी बीवी ने पाँसा पलट दिया।

"तुमने तो हद ही कर दी।" वह उसे धमकाती हुई बोली, "तुम्हें कहकर जाना चाहिए था। बताओ, तुमने तो हद ही कर दी। तुम चले गए। यहाँ सामान की नुमाइश लगा गए। अब हम इसकी रखवाली करें! कोई कुछ उठाकर चलता बने, तो तुम कहोगे, साहब ने रख लिया···।"

उसका यह दाँव अद्‌भुत था—तुम्हारे सामान की हम रखवाली कब तक करें!

बहुत कम ही लोग ऐसे होते हैं, जो इतने आत्मविश्वास से दोनों तरफ से हमला कर सकें। सच तो यह है कि ऐसे लोग हमला ही हमला करने के लिए बने होते हैं, उन्हें आत्मरक्षा की कभी जरूरत ही नहीं पड़ती। अपनी बीवी के इस चमत्कारी स्वभाव का असर मैंने उस मिस्तरी पर भी देखा। जिस तत्परता से वह मुझे जवाब दे रहा था, वह तत्परता मेरी बीवी के सामने एकदम गायब हो गई और वह आदमी क्षमायाचक बन गया, "हाँ

मेम साहब, ये बात आपने सही कही। पहले मैंने सोचा, फिर लगा, आपके आराम में खलल पड़ जायेगा।"

"बिना पूछे ये क्यों ले गए?" उसने जैक की तरफ इशारा करते हुए मिस्तरी को और ज्यादा शर्मिन्दा करने के लिए पूछा।

मिस्तरी लज्जित होकर बोला, "मेम साहब, मैं क्या बताऊँ, मगर जैक के लिवरवाला छेद चटक गया था। मैंने सोचा, जब मशीन जुड़वानी है, तो इसमें भी टाँका लगवा दूँ।"

उसकी इस कर्तव्यनिष्ठा का भी बीवी पर खास असर नहीं हुआ, "तुमने तो हद ही कर दी। बिना पूछे डिक्की का ताला भी खोल डाला!"

इसके बाद मिस्तरी ने पूरी तरह हथियार डाल दिए। उसके एकदम चुप हो जाने से जीत का सुख मेरी बीवी को मिला। वह उसके चेहरे से साफ झलक रहा था। सहसा उसमें एक अप्रत्याशित परिवर्तन हो गया। उसने पूछा, "पानी पियोगे?"

"पी लिया था मेम साहब, लेकिन थोड़ा और मिल जाता तो···"

"ठीक है, भिजवाती हूँ। कुछ खाया है?"

मिस्तरी बेशर्मी से हँसने लगा, "सवेरे चाय पी थी मेम साहब। कोई बात नहीं···।"

वह निहायत धूर्त है, मैंने सोचा, मगर बीवी ने वैसा नहीं सोचा। थोड़ी ही देर में अन्दर से डबल रोटी की फाँकें और आलू की सब्जी आ गई, जिसे उसने नदीदेपन के साथ खाया और हालाँकि मैं वहीं खड़ा था, उसने ऊँची आवाज में मेम साहब को दुआएँ दीं। पानी पीकर डकार ली और काम में जुट गया।

गोकि उस आदमी ने अपनी ईमानदारी सिद्ध कर दी थी, पर अब मैं किसी न किसी बहाने वहाँ चक्कर काटने लगा।

"देखिए साहब, इसके दाँत देखिए।" उसने शीशा चढ़ानेवाली मशीन दिखाते हुए कहा, "इसके दाँत घिस गए थे। मैंने इसे भी ठीक करा दिया है। अब यह नई से ज्यादा अच्छा काम देगी। क्या फायदा था, आप महीने-भर बाद ही दरवाजा फिर खुलवाते···।"

अपने बेढंगे औजारों और टेढ़ी-मेढ़ी उँगलियों की मदद से वह शाम

ढले तक दरवाजा ठीक करता रहा। इसके बाद उसने मुझे भी दरवाजे के बारे में इत्मीनान कर लेने को कहा। मैंने शीशा उतारा-चढ़ाया। वह जरूरत से ज्यादा ही कस गया था। दरवाजा बन्द किया, तो ताला बन्द हो गया, पर खोलने में खुद उसे भी खासी मेहनत करनी पड़ी।

"कोई बात नहीं साहब, अभी ठीक करता हूँ। जब तक ठीक न हो जाए, मैं पैसे नहीं लूँगा। पचास बार खोलना पड़ा, तो पचास बार खोलूँगा।" कहकर वह ताला ठीक करने में फिर जुट गया।

इस बीच अन्दर से मेरे लिए चाय आई, तो एक कप उसके लिए भी आ गई। यह बीवी की विचित्र आदतों में से एक थी। अगर मैं किसी को पानी पिलाने के लिए भी कह दूँ तो वह चिढ़ जाएगी। लेकिन उस पर वह खासी मेहरबान हो जाती है, जिसकी उसने मरम्मत की हो।

दरवाजे का ताला एक बार फिर दुरुस्त हुआ। वह बन्द हो जाता था, पर खुलता मुश्किल से था। पर मिस्तरी ने समझाया, "थोड़ा-सा इस्तेमाल करेंगे, तो अपने-आप ठीक हो जाएगा।"

इसके बाद उसने लोहे का एक अजीब-सा टुकड़ा मुझे देते हुए कहा, "ये मैंने निकाल दिया है। रख लीजिए।"

"निकाल दिया है? मगर ये है क्या?" मैंने पूछा।

"टेक है साहब। शीशा पूरी तरह नीचे न गिर जाए, इसलिए लगता है।"

"मगर इसे निकाल क्यों दिया?"

"फिक्र न करिए साहब। मैंने इन्तजाम कर दिया है। ये तो गल गया था। बस टूटने ही वाला था।" उसने बताया कि शीशा गिरने से रोकने के लिए उसने अन्दर एक ईंट का टुकड़ा अटका दिया है। आसपास कपड़ा ठूँस दिया है, इसलिए वह हिलेगा नहीं, "और फिर देखिए, मैं तो हूँ ही। कोई शिकायत हो, मुझे बताइयेगा।"

उसकी बात पर यकीन करने के अलावा और कोई उपाय नहीं था। मोटर और बीवी दोनों के ही बारे में मेरी समझ धोखा खाती रही है।

"पैसे कितने हुए?"

"अरे साहब, इतना छोटा-सा काम, मैं इसका क्या ले लूँ आपसे? चलिए, पचास दे दीजिए।"

"पचास! हद करते हो तुम! ये पन्द्रह रुपये का काम है ज्यादा-से-ज्यादा।" दरअसल, मैं अपनी बीवी से सीखी हुई चाल चलने की कोशिश कर रहा था। मेरी बीवी का खयाल था कि कोई चीज खरीदते वक्त या किसी को उसके काम का पैसा देते वक्त मैं सही ढंग से हुज्जत नहीं करता और ठगा जाता हूँ। मैंने हुज्जत करने का फैसला कर लिया था।

मगर वह मिस्तरी अजब बदमाश चीज निकला। एकदम तेवर बदलकर बोला, "साहब, मैं भाव-ताव करनेवाला आदमी नहीं हूँ। उम्दा काम करता हूँ और वाजिब दाम लेता हूँ। आपको लगता है, मैं ज्यादा माँग रहा हूँ, तो आप कुछ न दीजिए। मैं जाता हूँ।" उसने अपना सामान समेटना शुरू कर दिया। बहुत मुश्किल से वह पचास के बजाय पैंतालीस पर राजी हुआ। अब समस्या बीवी से पैंतालीस रुपये निकलवाने की थी। मुझे मालूम था, वह सुनते ही भड़क जाएगी, "पैंतालीस रुपये! उसने कहा और तुमने मान लिया होगा!"

इस जिरह से बचने के लिए अन्दर आकर मैंने कोशिश भर नाराजी जाहिर करते हुए कहा, "बेईमान साला, जरा-से काम के सत्तर रुपये माँग रहा था···।"

"सत्तर रुपये!" बीवी एकदम उठ खड़ी हुई। मैं डर गया कि कहीं सीधे मिस्तरी पर ही न टूट पड़े और मेरा भेद खुल जाए। मैंने फौरन जोड़ा, "मगर मैं उसे पैंतालीस दूँगा। इससे एक पैसा ज्यादा नहीं दूँगा।"

"पैंतालीस!"

"इतना तो ज्यादा नहीं है। गैराज ले जाता, तो अकील इसी काम के सत्तर-अस्सी तो लेता ही।"

"अकील की बात दूसरी है। चलो दे दो।" वह उदासीन होती हुई बोली, "काम ठीक कर दिया है?"

"हाँ, बना तो ठीक ही दिया है।"

वह आदमी पैंतालीस रुपये लेकर दोबारा आने का वायदा करके चला गया।

इसके बाद से मेरी मुसीबतों का सिलसिला और लम्बा हो गया। दरवाजे का ताला पहले से ज्यादा खराब हो गया और एक बार शीशा जो अन्दर घुसा, तो बाहर ही नहीं आया। हैंडल कुछ दिन तो हिलता रहा, उसके बाद एक दिन हाथ में आ गया। जिस दरवाजे में कोई गड़बड़ी नहीं थी, वहाँ आगे भी कुछ न हो, इस आश्वासन के साथ उस आदमी ने जो ठोंक-पीट की थी, उसका नतीजा यह हुआ कि वह भी झूलने लग गया।

दरवाजों की इस गड़बड़ी को मैंने कई रोज छुपाने की कोशिश की। बायाँ दरवाजा अन्दर से मुश्किल से खुलता था, इसलिए नाटकीय सेवा प्रदर्शित करते हुए मैं गाड़ी रोकते ही उतरकर बायाँ दरवाजा किसी आज्ञाकारी शोफर की तरह बीवी के लिए बाहर से खोल देता था। पर एक दिन भेद खुल ही गया। बायाँ दरवाजा बाहर से भी नहीं खुला। हैंडल पहले ही गायब था, अब अन्दर का लीवर भी कहीं दुबक गया। बीवी को सीटें लाँघकर उतरना पड़ा, तो वह मिस्तरी पर नहीं, मुझ पर बिगड़ गयी, "तुम्हें तो पैसे की बरबादी का शौक है।"

एक समझदार पति को सरेआम पत्नी की झाड़ खाने और स्वाभिमान बनाये रखने का तरीका मालूम होता है। मैं उन्हीं तरीकों का इस्तेमाल करता रहा, यानी कभी झुककर नाहक जूते का तस्मा खोलता-बाँधता था, कभी मुँह ऊपर किये हुए इस तरह टहलने की कोशिश करता था, गोया मैं इत्तफाक से ही किसी जोर से बोलनेवाली महिला के आसपास हूँ। वैसे मेरा उससे कोई सम्बन्ध नहीं है।

वापसी में मैं गाड़ी सीधे गैराज ले गया। अकील हमेशा की तरह एक गाड़ी के नीचे लेटा हुआ था। मुझे देखकर बाहर आया। मेरी मोटर के दरवाजे देखकर उसने अजीब-सा चेहरा बनाया, "ये आपने दरवाजों के साथ क्या किया है?"

मुझसे पहले मेरी बीवी बोली, "इनसे पूछिए। ये पता नहीं किसको पकड़ लाये। पैसे भी ले गया और दोनों दरवाजे चौपट कर गया।"

अकील हँसने लगा। बाहर-भीतर से दरवाजे की दुर्दशा देखता हुआ बोला, "आपने भी हद कर दी। ऐसी क्या जल्दी थी? आखिर वो था कौन मिस्तरी?"

मेरे बोलने की जरूरत नहीं पड़ी। वैसे भी मुझे उस आदमी का नाम तक नहीं मालूम था। बीवी ने उसका जो शब्दचित्र खींचा, वह इतना प्रामाणिक था कि अकील फौरन पहचान गया, "अरे वो चिरकुट !"

"चिरकुट ?"

"हाँ, हम लोग उसे चिरकुट कहते हैं। साला जिस दिन मरेगा, उसी दिन नहायेगा।" अकील ने कहा।

उसका मैकेनिक रियासत बोला, "साले को एक दिन बहुत मारा था मैंने।"

अकील ने और ज्यादा मजे लेकर उसकी पिटाई का ब्योरा दिया, "जानते हैं ? साला बिना फुएल पाइप खोले खन्ना साहब की मोटर की चेसिस जुड़वा रहा था। मोटर में आग लग जाती। साला रोता हुआ भाग गया था।"

मोटर के दरवाजे ठीक हो गए। इस बार अकील ही ने पूरे तीन सौ रुपये लिए। बीवी ने अकील को नहीं, मुझे ही एक बार फिर इस अपव्यय का दोषी ठहराया।

इसके बाद एक दिन चिरकुट फिर आया। उसे देखते ही मैं चिल्ला पड़ा, "फिर आ गए तुम ? भाग जाओ वरना बहुत मारूँगा। सारे दरवाजे चौपट करके रख दिए।"

"अरे साहब, ऐसा कैसे हो सकता है ? जो गड़बड़ी हो, बताइए, मैं ठीक करूँगा।"

"नहीं। हाथ नहीं लगाने दूँगा। भाग जाओ यहाँ से।"

वह आदमी झेंपता हुआ साइकिल पर बैठा और चला गया। मैं उसके अनाड़ीपन के किस्से लोगों को सुनाता रहा और मेरी बीवी मेरे भोंदूपन की कहानियाँ आने-जानेवालों को सुनाती रही।

इसके बाद एक बार मेरी मोटर एकदम रुक गयी। सेल्फ फँस गया। अकील ने बता रखा था कि सेल्फ फँस जाए, तो मोटर गियर में डालकर आगे-पीछे हिलाइए। मैंने हिलाया। सेल्फ फँसा का फँसा ही रहा। हारकर मैंने मोटर-स्टैंडवालों से पूछा, "आसपास कोई मोटर मैकेनिक होगा ?"

"हाँ, हैं तो, मगर अभी काम नहीं करेंगे।"

"क्या मतलब ?"

"क्या पता। कोई हड़ताल चल रही है।" स्टैंडवाले लड़के ने कहा।

मैं रिक्शा करके अकील के पास आया। वहाँ अजीब माहौल था। सहायक लड़के पेड़ के नीचे सो रहे थे और अकील एक मोटर की पिछली सीट पर बैठा सिगरेट पी रहा था।

"क्या बात है अकील साहब, छुट्टी मनायी जा रही है ?"

"आइए साहब, आइए।" अकील मोटर से उतर आया, "छुट्टी नहीं हड़ताल है।"

"हड़ताल ! कैसी हड़ताल ?"

"अरे साहब, अब क्या बतायें। साले चिरकुट के पीछे।"

"चिरकुट के पीछे ! क्या मतलब···?"

"अरे साहब, वही चिरकुट, जिसने आपकी मोटर के दरवाजे चौपट कर दिये थे···उसने एक डिप्टी एस० पी० की मोटर भी ठीक कर दी।" कहकर अकील हँसने लगा।

"मतलब, उनके दरवाजे भी खराब कर दिए ?"

"नहीं, उनके गियर का लीवर ठीक किया था। दूसरे दिन डी० एस० पी० साहब के हाथ में आ गया।"

मैं भी हँस पड़ा, "तुम लोगों का यह चिरकुट भी अजीब है।"

देर तक हँसी में साथ देने के बाद अकील ने पूछा; "कहिए, कैसे तकलीफ की ?"

"अरे यार, गाड़ी का सेल्फ फँस गया है।"

"हूँ।" अकील गम्भीर हो गया, "ये तो मुश्किल हो गयी।"

"अरे, किसी लड़के को भेज दो।"

"वही तो कह रहा था···।" अकील बोला, "बात ये है कि आजकल हड़ताल चल रही है। शहर के सारे मैकेनिक हड़ताल पर हैं। अरे हाँ, वो बात बताना तो मैं भूल ही गया। डी० एस० पी० साहब को चिरकुट दोबारा मिला, तो उन्होंने उसको पीट दिया। बहुत मारा। उसका एक पैर ही तोड़ दिया। बेचारा पलस्तर चढ़ाये घूम रहा है।"

"तो हड़ताल का क्या मतलब ?"

"हम सब लोग डी० एस० पी० के पास गए कि उसका खर्चा दो। वो गालियाँ बकने लगा। इसके बाद हम लोगों ने हड़ताल कर दी। किसी की मोटर नहीं बनायेंगे।"

"किसी से क्या मतलब ?"

"क्या करें साहब, थानेवालों ने रिपोर्ट तक नहीं लिखी। अब आप सब लोग कुछ करिए।"

"मर गए ! यार, ये तो हद है ! मेरी मोटर वहाँ फँसी पड़ी है।"

इसी वक्त रिक्शे पर चिरकुट आ गया। अकील ने सहारा देकर उसे नीचे उतारा। उसके एक पैर पर पलस्तर चढ़ा हुआ था और दोनों कुहनियों पर मर्क्यूरोक्रोम झलकाती हुई पट्टियाँ बँधी थीं। उतरते-उतरते उसने अकील से कहा, "सब जगह हड़ताल है। बस, जेतली, डागा और रतन साहब के गैराजों में काम हो रहा है। वहाँ भी बहुत कम मैकेनिक काम पर आए हैं। अरे साहब, आप ?"

अकील ने कहा, "साले चिरकुट, तुम्हारे पीछे साहब की मोटर भी अटक गयी। सेल्फ फँस गया है।"

"अब क्या बतायें साहब।" चिरकुट झेंपकर अपने पलस्तर के भीतर उँगली घुसाकर खुजली करने लगा।

अकील बोला, "साहब देखिए, आखिर गरीब आदमी है। काम में गलती किससे नहीं होती है।"

"अरे यार, गलती हो तो बात है। ये काम कम करता है, बिगाड़ता ज्यादा है। तुमने तो मेरी मोटर के दरवाजे देखे ही होंगे ?" मैंने खीजकर कहा।

"ऐसा न कहिए साहब।" चिरकुट आगे आ गया, "सत्तर साल से ऊपर उमर हो गयी है। आठ साल का था, जब जानसन साहब के साथ काम सीखना शुरू किया था···।"

"अबे किया होगा शुरू। तुमने जो किया, वो मेरे सामने है। काम नहीं हो पाता, तो मत करो।"

"कौन इस उमर में अपनी खुशी से काम करता है साहब। मजबूरी ही

होती है, तभी आदमी काम भी करता है और लात भी खाता है। बुरा मत मानिएगा साहब, आप बड़े आदमी हैं। बार-बार मोटर बिगड़ेगी, बार-बार ठीक करायेंगे, फिर भी आपका घर भरा-पूरा रहेगा। मुझे आपके पैंतालीस न मिलें, तो फाके होंगे।"

"अमाँ हद कर दी तुमने ! रियासत तक ने तो तुम्हें पीटा था।" मैंने गुस्से में कहा।

चिरकुट ने तीखेपन से कुछ कहने के लिए मुँह खोला, फिर रुक गया। उसके बहुत मैले चेहरे पर उदासी की एक मोटी परत चढ़ गयी, "हाँ, इसने मुझे मारा था। दो-तीन झापड़ मारे थे और बहुत-सी गालियाँ दी थीं। फिर मुझे ढाबे पर ले जाकर चाय पिलायी और दो समोसे खिलाये। चलते वक्त इसने फिर मारा था, मगर टाँग नहीं तोड़ी थी मेरी। मेरी टाँग नहीं तोड़ी थी, समझे बाबू साहब ! टाँग तोड़कर तुम लोगों ने तो मोहताज कर दिया मुझको। अपाहिज !"

"हम लोगों ने ! मतलब ?" मैं उसके बयान पर बौखला गया।

"अरे छोड़िए साहब, छोड़िए।" चिरकुट मुड़कर लँगड़ाता हुआ पेड़ की तरफ चल दिया।

अकील ने मेरी मोटर का काम न कर पाने के लिए एक बार फिर माफी माँगी। मैं घर वापस आ गया। मुझे यकीन था कि बीवी एक बार फिर झींकेगी, मगर वह शायद किसी काम में व्यस्त थी।

रात कोई आठ बजे मुझे चकित करता हुआ चिरकुट बरामदे में आ खड़ा हुआ।

"तुम ?"

"माफ कीजिएगा साहब, मेरी वजह से आपको तकलीफ हुई है।"

"इसीलिए आये हो ?"

"मैंने सोचा, मेम साहब क्या कहेंगी ! बताइए साहब, मोटर कहाँ खड़ी है ?" चिरकुट ने पूछा।

"मगर तुम तो हड़ताल पर हो !"

"वो तो सही है साहब, हड़ताल अपनी जगह है और इनसानियत

अपनी जगह। मैं चुपचाप सेल्फ ठीक कर दूँगा। किसी को कहिएगा नहीं।"

सेल्फ को उसने एक छोटे रिंच के सहारे मुश्किल से कुछ सेकण्डों में ठीक कर दिया, फिर बोला, "इधर रोशनी दिखाइए।"

मैंने रोशनी उधर डाली, जिधर उसने कहा था। उसने एक छोटी-सी धुरी जैसी चीज दिखाकर कहा, "देखिए साहब, अब कभी सेल्फ फँस जाये, तो इसे रिंच से सीधी तरफ घुमा दीजिए, बस। और ये रिंच रख लीजिए, काम आता रहेगा।"

गाड़ी तुरन्त चालू हो गयी।

"कितने पैसे दे दूँ?"

"शर्मिन्दा न करिए साहब। कोई और खिदमत होगी, तो माँग लूँगा।"

"कहीं छोड़ दूँ तुम्हें?"

"नहीं हुजूर, चला जाऊँगा। मेम साहब को सलाम कहिएगा। उनको मेरी वजह से तकलीफ हुई होगी, मगर माफी माँग लीजिएगा। बूढ़ा आदमी हूँ, माफ कर देंगी···और हाँ, अकील को न बताइएगा कि मैंने सेल्फ ठीक कर दिया है।"

अपना सफेद पलस्तरवाला पैर घसीटता हुआ वह सड़क के किनारे-किनारे चल दिया।

कटोरी देवी

कटोरी देवी की जीवनी कई अर्थों में बहुत महत्त्वपूर्ण है। सच तो यह है कि कटोरी देवी अपने समय और समाज की एक तीखी आलोचना मानी जानी चाहिए। वह औरत एक जरूरी दस्तावेज के तौर पर भी पहचानी जा सकती है।

कटोरी देवी की जीवनी का बयान करने से पहले एक बात बता दूँ। उससे परिचय कोई बहुत सुखद अनुभव नहीं है, बल्कि कुछेक को वह खासा खिजानेवाला और अपमानजनक भी लगा है। पिछले दिनों ऐसी ही एक घटना अखबारों में छप भी चुकी है।

उस औरत के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट करने गए एक बहुत प्रसिद्ध नेता जैसे ही अपनी मोटर से उतरे, कटोरी देवी ने एक फोहश गाली दी, अपनी पंजर बन चुकी चारपाई से उछली और नेता के ऊपर झपट पड़ी। जब तक कोई कुछ समझता, कटोरी देवी ने अपने हाथ में थमे ईंट के टुकड़े से उसका सिर फोड़कर लहूलुहान कर दिया। नेता जितने उत्साह से आया था, उतनी ही फुर्ती से मोटर में वापस चला गया। कटोरी देवी इसके बाद तब तक माँ-बहन की गन्दी गालियाँ बकती रही जब तक उसका गला ही थक नहीं गया।

कटोरी देवी से एक परिचय तो बहुत पहले हुआ था। वह मुझे उस परिचय के बाद दो कारणों से भूली नहीं थी। एक तो उसका नाम बहुत हद तक विचित्र लगा था और दूसरे जिस वजह से उससे परिचय हुआ था, वह किसी को भी प्रभावित किए बिना नहीं रहती।

वे तीसरे आम चुनाव के दिन थे। इस देश में पहली बार लोगों को महसूस हो रहा था कि जिन चुनावों से उन्हें बहुत ज्यादा उम्मीद हो चली